

सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना

1. प्रस्तावना (Introduction)

सामाजिक कार्य अनुसंधान सामाजिक समस्याओं, सामाजिक संबंधों, सामाजिक परिस्थितियों तथा मानवीय व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करने की एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में अनुसंधानकर्ता किसी समस्या का अध्ययन करने से पहले उसके संभावित कारणों या परिणामों के संबंध में एक अनुमान प्रस्तुत करता है। इस अनुमान को परिकल्पना कहा जाता है।

परिकल्पना अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्रदान करती है तथा तथ्यों के संकलन और विश्लेषण में सहायता करती है। इसके माध्यम से अनुसंधानकर्ता किसी सामाजिक समस्या के संभावित कारणों और उनके बीच संबंधों की जाँच करता है।

2. परिकल्पना का अर्थ (Meaning of Hypothesis)

परिकल्पना दो शब्दों से मिलकर बनी है—'परि' तथा 'कल्पना'। इसका सामान्य अर्थ किसी विषय या समस्या के संबंध में लगाया गया ऐसा अनुमान है, जिसकी सत्यता की जाँच अनुसंधान द्वारा की जा सकती है।

सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना किसी सामाजिक घटना, समस्या, व्यवहार या दो अथवा दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंध के संबंध में प्रस्तुत किया गया एक अस्थायी कथन है।

उदाहरण: यदि कोई अनुसंधानकर्ता यह अध्ययन करना चाहता है कि बेरोजगारी का युवाओं के मानसिक तनाव से क्या संबंध है, तो वह परिकल्पना बना सकता है कि "बेरोजगारी और युवाओं में मानसिक तनाव के बीच सकारात्मक संबंध है।" इसके बाद अनुसंधानकर्ता तथ्यों के आधार पर इस कथन की जाँच करेगा।

3. परिकल्पना की परिभाषा (Definition of Hypothesis)

परिकल्पना की अवधारणा को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है—

1. सामान्य परिभाषा: परिकल्पना किसी अनुसंधान समस्या के संभावित समाधान या दो अथवा दो से अधिक चरों के बीच संबंध के संबंध में प्रस्तुत किया गया एक अस्थायी कथन है, जिसकी वैज्ञानिक विधियों द्वारा जाँच की जा सकती है।

2. सामाजिक कार्य अनुसंधान के संदर्भ में: परिकल्पना वह परीक्षण योग्य कथन है, जिसके माध्यम से अनुसंधानकर्ता सामाजिक घटनाओं, सामाजिक समस्याओं तथा मानवीय व्यवहार के बीच संभावित संबंधों का अध्ययन करता है।

4. सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना की विशेषताएँ

परिकल्पना की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. अस्थायी कथन

परिकल्पना अनुसंधान के प्रारंभ में प्रस्तुत किया गया एक संभावित कथन है। इसे अनुसंधान के परिणाम आने से पहले अंतिम सत्य नहीं माना जाता।

2. परीक्षण योग्य

एक अच्छी परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसकी जाँच अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली तथा अन्य उपयुक्त अनुसंधान विधियों द्वारा की जा सके।

3. स्पष्टता

परिकल्पना की भाषा सरल, स्पष्ट और अर्थपूर्ण होनी चाहिए, ताकि अनुसंधानकर्ता और अन्य व्यक्ति उसके अर्थ को आसानी से समझ सकें।

4. चरों के बीच संबंध

परिकल्पना प्रायः दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंध को व्यक्त करती है।

उदाहरण—शिक्षा के स्तर और रोजगार के अवसरों के बीच संबंध।

5. वैज्ञानिक आधार

परिकल्पना का निर्माण उपलब्ध तथ्यों, पूर्व अध्ययनों, सिद्धांतों तथा तार्किक विचारों के आधार पर किया जाना चाहिए।

6. सीमित एवं विशिष्ट

परिकल्पना इतनी व्यापक नहीं होनी चाहिए कि उसका परीक्षण करना कठिन हो जाए। उसे अनुसंधान की समस्या के अनुरूप विशिष्ट होना चाहिए।

7. वस्तुनिष्ठता

परिकल्पना का निर्माण व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के बजाय तथ्यों और तर्कों के आधार पर होना चाहिए।

8. सत्यापन की संभावना

अनुसंधान द्वारा प्राप्त प्रमाणों के आधार पर परिकल्पना को स्वीकार करने, अस्वीकार करने या उसमें संशोधन करने का निर्णय लिया जा सकता है।

5. सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना के प्रकार

परिकल्पना के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं—

1. शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis)

शून्य परिकल्पना यह बताती है कि अध्ययन किए जा रहे दो चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध या अंतर नहीं है।

उदाहरण: ग्रामीण और शहरी युवाओं के रोजगार संबंधी दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2. वैकल्पिक परिकल्पना (Alternative Hypothesis)

वैकल्पिक परिकल्पना यह बताती है कि दो चरों के बीच संबंध या समूहों के बीच अंतर मौजूद है।

उदाहरण: ग्रामीण और शहरी युवाओं के रोजगार संबंधी दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है।

3. दिशात्मक परिकल्पना (Directional Hypothesis)

यह परिकल्पना चरों के बीच संबंध की दिशा भी स्पष्ट करती है।

उदाहरण: शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

4. अदिशात्मक परिकल्पना (Non-directional Hypothesis)

इसमें चरों के बीच संबंध या अंतर की संभावना बताई जाती है, लेकिन उसकी दिशा स्पष्ट नहीं की जाती।

उदाहरण: शिक्षा के स्तर और रोजगार के अवसरों के बीच संबंध है।

5. सरल परिकल्पना (Simple Hypothesis)

इसमें एक स्वतंत्र चर और एक आश्रित चर के बीच संभावित संबंध का अध्ययन किया जाता है।

उदाहरण: बेरोजगारी का युवाओं के तनाव से संबंध है।

6. जटिल परिकल्पना (Complex Hypothesis)

इसमें दो या दो से अधिक स्वतंत्र तथा आश्रित चरों के बीच संबंध का अध्ययन किया जाता है।

उदाहरण: शिक्षा, पारिवारिक आय और सामाजिक समर्थन का महिलाओं के सशक्तीकरण पर प्रभाव पड़ता है।

6. सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना का महत्त्व

सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना का महत्त्व निम्नलिखित है—

1. अनुसंधान को दिशा प्रदान करना

परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को यह निर्धारित करने में सहायता करती है कि उसे किन तथ्यों का संकलन करना है और किस समस्या पर ध्यान केंद्रित करना है।

2. अनुसंधान समस्या को स्पष्ट करना

यह अनुसंधान की समस्या को सीमित और स्पष्ट बनाती है, जिससे अध्ययन को व्यवस्थित रूप से पूरा किया जा सकता है।

3. तथ्यों के संकलन में सहायता

परिकल्पना के आधार पर अनुसंधानकर्ता यह तय करता है कि कौन-सी जानकारी आवश्यक है और उसे किस विधि

से एकत्रित किया जाना चाहिए।

4. चरों के संबंधों का अध्ययन

परिकल्पना सामाजिक घटनाओं तथा विभिन्न चरों के बीच संभावित संबंधों की जाँच करने में सहायता करती है।

5. समय और संसाधनों की बचत

स्पष्ट परिकल्पना होने से अनावश्यक तथ्यों के संकलन से बचा जा सकता है तथा अनुसंधान के समय और संसाधनों का उचित उपयोग होता है।

6. सिद्धांतों के निर्माण में सहायता

परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणाम सामाजिक सिद्धांतों के विकास, संशोधन और सत्यापन में योगदान दे सकते हैं।

7. सामाजिक समस्याओं को समझना

परिकल्पना के माध्यम से गरीबी, बेरोजगारी, बाल अपराध, घरेलू हिंसा, नशे की समस्या और महिला सशक्तीकरण जैसी समस्याओं के संभावित कारणों तथा संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।

8. निष्कर्ष निकालने में सहायता

अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करके परिकल्पना के समर्थन में उपलब्ध प्रमाणों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

7. सामाजिक कार्य अनुसंधान में परिकल्पना का उदाहरण

अनुसंधान विषय: ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण पर सरकारी योजनाओं का प्रभाव।

परिकल्पना: सरकारी कल्याणकारी योजनाओं में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी और उनके आर्थिक सशक्तीकरण के बीच सकारात्मक संबंध है।

इस परिकल्पना की जाँच करने के लिए अनुसंधानकर्ता ग्रामीण महिलाओं से साक्षात्कार कर सकता है, प्रश्रावली का उपयोग कर सकता है तथा उनकी आर्थिक स्थिति, आय, निर्णय लेने की क्षमता और योजनाओं में भागीदारी से संबंधित तथ्यों का संकलन कर सकता है।

इसके बाद प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करके यह पता लगाया जा सकता है कि उपलब्ध प्रमाण परिकल्पना का समर्थन करते हैं या नहीं।

यहाँ ध्यान देना आवश्यक है कि केवल संबंध पाए जाने से यह सिद्ध नहीं होता कि सरकारी योजनाओं ने ही आर्थिक सशक्तीकरण में परिवर्तन उत्पन्न किया है। कारणात्मक प्रभाव स्थापित करने के लिए उपयुक्त अनुसंधान डिजाइन और अतिरिक्त प्रमाणों की आवश्यकता हो सकती है।

8. परिकल्पना निर्माण की प्रक्रिया

परिकल्पना के निर्माण की प्रमुख अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं—

1. अनुसंधान समस्या का चयन करना।
2. संबंधित साहित्य और पूर्व अध्ययनों का अध्ययन करना।
3. समस्या से संबंधित प्रमुख चरों की पहचान करना।
4. चरों के बीच संभावित संबंध निर्धारित करना।
5. स्पष्ट एवं परीक्षण योग्य कथन तैयार करना।
6. उपयुक्त अनुसंधान विधियों द्वारा परिकल्पना की जाँच करना।
7. प्राप्त तथ्यों के आधार पर परिणामों की व्याख्या करना।
9. निष्कर्ष (Conclusion)

अंततः कहा जा सकता है कि परिकल्पना सामाजिक कार्य अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह अनुसंधानकर्ता को सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए दिशा प्रदान करती है तथा तथ्यों के व्यवस्थित संकलन, विश्लेषण और व्याख्या में सहायता करती है। परिकल्पना के वैज्ञानिक परीक्षण से सामाजिक घटनाओं और मानवीय व्यवहार को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इस प्रकार परिकल्पना सामाजिक कार्य अनुसंधान को अधिक व्यवस्थित, तार्किक और वैज्ञानिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।